

(चौपाई)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै ।
तासों शिव-तिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक्कृतनत्रय ध्यावै ॥
ताकौ चहुँगति के दुःख नाहीं, सो न परे भवसागर माहीं ।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक्कृतनत्रय ध्यावै ॥
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै ।
सो परमात्मपद उपजावै, जो सम्यक्कृतनत्रय ध्यावै ॥
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक्कृतनत्रय ध्यावै ॥
सोई लोकालोक निहारे, परमानन्ददशा विसतारे ।
आप तिरै और न तिरवावै, जो सम्यक्कृतनत्रय ध्यावै ॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय समुच्चयजयमाला अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

एक स्वरूप-प्रकाश-निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय ॥
ॐ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री अरहंत छबि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है ॥टेक॥
वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है ।
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढ़ाया है ॥१॥
रूप सुधाकर अंजलि भरभर, पीवत अति सुख पाया है ।
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद सचीपति गाया है ॥२॥
तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै माहिं समाया है ।
भ्रम तम दुःख आताप नस्यो सब, सुख सागर बढ़ि आया है ॥३॥
प्रकटी उर सन्तोष चन्द्रिका, निज स्वरूप दर्शाया है ।
धन्य-धन्य तुम छवि 'जिनेश्वर', देखत ही सुख पाया है ॥४॥